मैंने, आज प्रातः माननीय नेताओं के साथ बैठक की थी, और हम इस बात पर सहमत हुए कि इस चर्चा के लिए कम से कम 12 घंटे का समय दिया जाए। यदि सभा चाहे तो हम आज रात 10 बजे तक यह चर्चा जारी रख सकती है और इसके अतिरिक्त हम कल भी इस वाद-विवाद को जारी रख सकते हैं क्योंकि कल प्रश्नकाल नहीं होगा। हम अंदाजा लगा रहे हैं कि यदि माननीय प्रधान मंत्री महोदय चाहें तो शाय 5 बजे अथवा 6 बजे उत्तर दे सकते हैं।

इस मामले को आरम्भ करने से पहले मुझे सभी माननीय सदस्यों को इसके बारे में बताने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप सभी को इस वाद-विवाद के महत्व के बारे में पता है। पूरे देश की निगाहें इसपर लगी हैं। माननीय नेताओं ने उन्हें तथा सदस्यों को दिए गए समय के महत्व पर ठीक ही बल दिया था, क्योंकि इसके द्वारा ही वे अपने विचार रख सकते हैं। जहां तक अध्यक्षपीठ का संबंध है, निश्चित रूप से पूरा अवसर दिया जाएगा। सभा के सभी दलों से मेरी सविनय अपील है कि चर्चा इस तरीके से होनी चाहिए, जिससे कि संसद की गरिमा बढ़े। महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए जाएंगे और कुछ टोका-टाकी भी होगी, परन्तु कृपया यह ध्यान रखिए कि सभा पूरे गरिमामय तरीके से उस प्रयोजनार्थ चले, जिसके लिए वह बुलाई गई है। देश की निगाहें हम पर हैं। इसलिए, कृपया सहयोग कीजिए। अध्यक्षपीठ का यह देखने के अतिरिक्त कोई कार्य नहीं है कि सभा उचित रूप से चले।

विपक्ष के माननीय नेता मुझे खेद है, मुझे बताया गया है कि माननीय प्रधानमंत्री महोदय बोलेंगे।

(व्यवधान)

प्रधानमंत्री (डा. मनमोहन सिंह) : अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं प्रस्ताव करता हूं:—

"कि यह सभा मंत्रि परिषद में अपना विश्वास व्यक्त करती है"

अध्यक्ष महोदय, आज हमारी सरकार अपने कार्यकाल के चार वर्ष और दो माह का समय पूरा कर चुकी है। पिछले कई दशकों से हम अपने कार्यकाल के प्रारंभ होने के कुछेक महीनों में ही विश्वास मत सिद्ध करने के लिए बाध्य किए जाने के अभ्यस्त हो चुके हैं। यहां पर यदि हम चार वर्ष से ज्यादा समय से टिके हुए हैं तो इस सबका श्रेय, संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यू.पी.ए.) के सभी नेताओं, यूपीए अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी के नेतृत्व, श्री ज्योति बसु, श्री हरिकिशन सिंह सुरजीत और डा. एम. करूणानिधि के समझबूझ और दूरदर्शी नेतृत्व को ही जाता है। ये सभी हमारी गठबंधन सरकार के वास्तुकार हैं, यह तो उनकी समझदारी और दूरदर्शिता ही है जिससे हमारी सरकार को इन चार वर्षों तक सुचारू रूप से चलाने में मुझे सहायता मिली है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांत रहें। आपको पूरा अवसर मिलेगा।

डा. मनमोहन सिंह : अध्यक्ष महोदय, मुझे खेद है कि संसद का यह सत्र ऐसे समय पर बुलाया गया है जब सरकार का ध्यान अर्थव्यवस्था विशेषकर मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने और हमारे लोगों विशेषकर हमारे कृषकों के कल्याण के कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने पर केन्द्रित है। मेरा कहना है कि महोदय इस प्रथा से बचना चाहिए। मैंने वाम दलों सहित सभी राजनीतिक दलों को बार-बार यह आश्वासन दिया था कि यदि सरकार को अपने सुरक्षोपाय करार पर अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आई.ए.ई.ए.) के साथ वार्ता पूरी करने की अनुमति दी जाती तो परमाणु आपूर्तिकर्त्ता समूह (एन.एस.जी.) का निर्णय होने के बाद मैं स्वयं संसद में आता और नागरिक परमाणु ऊर्जा निगम करार जो कि हम करना चाहते हैं, से पहले संसद का मार्गदर्शन मांगता। यह मेरा सत्यनिष्ठ आश्वासन था।

अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य इस बात से अवगत हैं कि वे विशिष्ट कारण जिनके चलते इस विश्वास मत की आवश्यकता पड़ी वह सिविल परमाणु ऊर्जा के विकास में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग मांगने संबंधी हमारी पहल के मुद्दे पर वाम दलों के समर्थन वापस लेने से उत्पन्न हुए है। समर्थन वापस लेने की सूचना मुझे उस समय मिली जब मैं जापान में जी-आठ की बैठक में शिरकत कर रहा था। मैं जैसे ही वापस आया मैंने महामहिम प्रधानमंत्री से मुलाकात की और मैंने स्वयं यथाशीघ्र संसद में अपना विश्वास मत प्रस्तुत करने का प्रस्ताव किया। यह सत्र उसी दायित्व को पूरा करने के लिए बुलाया गया है।

महोदय, मैं विगत चार वर्षों में इस सरकार के पूरे रिकार्ड के आधार पर आज यहां इस सभा का समर्थन मांगता हूं। जब मैंने प्रधानमंत्री का पद ग्रहण किया था तो मुझे यह दायित्व सौंपा गया था कि मैं हर समय और हर ममाले पर राष्ट्र हित में कार्य करूं। मैं इस सम्मानीय सभा को इस सभा के माध्यम से भारत के लोगों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि हमने प्रत्येक निर्णय, प्रत्येक नीति पूरी तरह से इस विश्वास से बनाई है कि ऐसा हमने हमारे लोगों और राष्ट्र के हित में किया है।

हमने जो कुछ भी किया है उसकी प्रेरणा हमें अपने गौरवमयी स्वतंत्रता संग्राम और राजीव गांधी की उस शपथ से मिली है जिसमें कहा गया हे कि हमारा मिशन राष्ट्र को 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने का है।

अध्यक्ष महोदय, मैं सभा को हमारे कार्यों की समीक्षा करने हेतु अवसर देने का स्वागत करता हूं। मुझे इस बात में कोई शक नहीं है कि भारत के लोग जब इस बात पर ध्यान देंगे कि हमने क्या-क्या

[डा. मनमोहन सिंह]

कार्य किए हैं तो वे हमारी सरकार और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जो कि सबसे पुरानी और अनुभवी पार्टी है, से अपनी आस्था जताएंगे। मेरा मानना है कि हमारी पार्टी इस महान राष्ट्र की सर्वाधिक देशभक्त राजनीतिक पार्टी है।

अध्यक्ष महोदय, यह हमारे स्वतंत्रता संग्राम की विरासत ही है जिसने इस सरकार को बनाए रखा हुआ है। प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करते हुए मैं महान गुरू गोविन्द सिंह की प्रसिद्ध उक्ति से प्रेरित हुआ हूं और मैं उन शब्दों को दोहरा रहा हूं जो गुरू गोविन्द सिंह जी ने कहे थे जिससे हमें अपने कार्यों के निष्पादन में आनन्द आता है।

"देहु शिवा वर मोहे, शुभ करमन तें कबहुं न टरूं।
न डरूं अरसौं जब जाए लड़ूं, निश्चय कर अपनी जीत करूं।।
अर सिख हूं, अपने ही मन सौं, इहि लालच हौं, गुन तौं उचरौं।
जब आव की औंध निधान बनै, अत हि रन में तब जूझ मरूं।।"

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ:

"कि यह सभा मंत्रिपरिषद् में अपना विश्वास व्यक्त करती है। माननीय प्रधानमंत्री ने प्रस्ताव पहले ही प्रस्तुत कर दिया है। अब विपक्ष के माननीय नेता बोलेंगे।"

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधीनगर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रधानमंत्री द्वारा लाए गए प्रस्ताव का विरोध करने के लिए खड़ा हूं। इसके बावजूद कि उन्होंने कहा कि गत चार वर्षों के दौरान इस सरकार ने कार्यनिष्पादन की पूर्णता के आधार पर विचार करने का अवसर प्रदान करेगा, न केवल इस आधार पर कि सरकार अल्पमत में आ गई है बल्कि इस सरकार के कार्यनिष्पादन की पूर्णता पर आज तथा कल वाद-विवाद होगा।

अध्यक्ष महोदय : यह एक महत्वपूर्ण वाद-विवाद है तथा विपक्ष के नेता बोल रहे हैं।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मुझे पुराने सभी मामले याद हैं जहां विश्वास प्रस्ताव लाए गए तथा लगभग निरपवाद रूप से प्रधानमंत्री ने वाद-विवाद की शुरूआत कार्यनिष्पादन का सारांश प्रस्तुत कर की। निश्चित रूप से प्रधानमंत्री वाद-विवाद का उत्तर देने के लिए स्वतंत्र है तथा प्रारंभ में संक्षिप्त टिप्पणी कर सकते हैं जैसा कि उन्होंने किया।

प्रारंभ में मुझे यह कहने दें कि सभा में केन्द्रबिन्दु यह होना चाहिए कि यह बहस क्यों आवश्यक हुई। सामान्यतया, परमाणु समझौते का मामला दो वर्षों से चल रहा था। गत अगस्त, 2007 में पहली बार मुझे यह प्रतीत हुआ कि इस सरकार ने वामपक्ष के साथ नाता तोड़ने का मन बना लिया है जब कोलकाता दैनिक के एक संवाददाता को मुखपृष्ठ पर प्रमुख रूप से यह छापने को कहा गया कि जहां तक अमेरिका-भारत परमाणु सौदे का संबंध है, सरकार ने एक निर्णय लिया है जिसपर कोई बातचीत नहीं हो सकती है तथा यदि वामपक्ष इसका अनुमोदन नहीं करता है तो वे जो भी करना चाहें इसके लिए वे स्वतंत्र हैं। उस समय मैंने महसूस किया कि जो कुछ भी हुआ वह अचानक हुआ। लेकिन वह चरण अगस्त से लेकर आजतक जारी रहा जिसके परिणामस्वरूप मुझे बार-बार कहना पड़ा कि मुझे लगता है कि इस सरकार को पक्षाघात हो गया है और परमाणु समझौते के अलावा कोई भी बात नहीं की जा रही है।

जब प्रधानमंत्री ने कहा कि यह वह समय था जब हम मुद्रास्फीति, मूल्य, जो आम आदमी को प्रभावित करते हैं, की समस्याओं को दूर करने पर ध्यान देना चाहिए था, इसकी बजाए, मुझे इस पर आश्चर्य होता है कि लगभग एक वर्ष से परमाणु समझौते पर सरकार तथा वामदलों के बीच विवाद चला आ रहा है। स्पष्ट रूप से, प्रारंभ में मुझे कहने दें कि मैं वामपक्ष से सहमत नहीं हूं, कई मामलों में हममें व्यापक मतभेद हैं लेकिन इस विशेष मामले में, मैं कहूंगा कि यदि सरकार आज अस्थिर हुई है तथा ससंद के कार्यभार संभालने के चार वर्ष तथा दो माह पश्चात् जबकि 22 मई, 2004 को इस सरकार को शपथ दिलाई गई है, इस प्रकार के विश्वास प्रस्ताव की मांग की गई है – तो इस सरकार की मतदान में हारने की संभावना है... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : वे विपक्ष के नेता हैं। कृपया व्यवधान न डालें।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैंने कहा है, "मतदान से हारने की संभावना है", तथा किसी को इसपर आपत्ति नहीं होनी चाहिए। आखिरकार, ऐसे लोग हैं जो यह कह रहे हैं कि ऐसा होने जा रहा है; इतने सारे मत इस तरह या उस तरह डाले जाएंगे। मैंने ऐसा नहीं कहा है। मतों में हारे जाने की संभावना से कोई इंकार नहीं कर सकता है। यह ऐसा कहने जैसा है, जैसा कि मैंने बार-बार कहा कि संप्रग सरकार की स्थिति आज आई.सी.यू. में भर्ती मरीज जैसी है। यदि कोई मरीज के बारे में बात करता है तो स्वाभाविक रूप से पहला प्रश्न पूछा जाता है "कि वे बचेंगे या नहीं?"... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री आठवले, मैं इसकी अनुमति नहीं दूंगा। कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए। इस प्रकार के व्यवधान की अनुमति नहीं है।

(व्यवधान)